जयद्रथ-वध - कवि मैथिलीशरण गुप्त | 16/05/20

सप्रसंग- व्याख्या

[redacted] शास्त्री I अनिवार्य II पत्र - प्रथम खण्ड

राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न:- "हे वत्सलांछन विष्णु तब कहकर वचन श्रद्धा पगे,
धीरज बँधाकर पाण्डवों को शीघ्र समझाने लगे।
हरने लगे सब शोक उनका ज्ञान के आलोक में।
कुछ शान्ति देती है बड़ों की ही सान्त्वना ही शोक में।"

उत्तर:- सन्दर्भ→प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक जयद्रथ-वध के तृतीय सर्ग से ली गई है। इसके रचयिता राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्तजी है। प्रस्तुत पद में कवि अभिमन्यु की मृत्यु के बाद दुखी अर्जुन को देखकर भगवान श्रीकृष्ण भी दुःखी हो गये हैं और फिर अपने ही भक्तों को समझाने लगते हैं। उसी से सन्दर्भित दृश्य का वर्णन करते हैं।

व्याख्या- कवि कहता है कि अपने प्रियों पर कृपा करने वाले भगवान विष्णु बुद्धिमानी पूर्ण वचनों को कहकर पाण्डवों को समझाते हैं और उन्हें धैर्य बँधाते हैं। इस प्रकार अपने ज्ञानपूर्ण बातों से भगवान विष्णु पाण्डवों के समस्त शोक को दूर करते हैं। कवि का यह कहना पूर्णतः सत्य है कि बड़ों की सान्त्वना छोटों को शान्ति प्रदान करती है। दुःख की घड़ी में बड़ों द्वारा ढाँढस बँधाने से सचमुच कुछ क्षण के लिए पीड़ा कम हो जाती है।

विशेष- प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि यही कहना चाहते हैं कि शोक में डूबे हुए समस्त परिवार को अभी सान्त्वना की आवश्यकता थी, जिसकी पूर्ति स्वयं श्रीकृष्ण ने की। श्रीकृष्ण के समझाने पर ही पाण्डवों को शान्ति मिली।

भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर एक बार भृगु ऋषि ने लात मारी थी, उसके चिन्ह को 'श्रीवत्स'

शेष आगे—

कहते हैं। इसलिए कवि ने विष्णु को 'श्रीवत्स' के लांछनवाला माना है।

डॉ० देव-चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

दिगंत- भाग-2 काव्य खण्ड 16/05/20

शीर्षक- अभिनायक - कवि रघुवीर सहाय
उपशास्त्री - अनिवार्य द्वितीय-पत्र
राष्ट्रभाषा हिन्दी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. प्रश्न:- अभिनायक कविता का केन्द्रीय भाव क्या है?

उत्तर:- 'अभिनायक' कविता का केन्द्रीय भाव भारतीय ~~लोकतांत्रिक~~ लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है। यह ऐसी व्यवस्था पर व्यंग्य करता है जो सत्ताधारी वर्ग के राजसी ठाट-बाट के साथ जन सामान्य में अपना गुणगान करवा कर अपने को अभिनायक सिद्ध करने का प्रयास करता है। कवि अभिनायक शब्द का प्रयोग (तानाशाह) के लिए किया है।

2. प्रश्न:- 'अभिनायक' कविता कवि के किस काव्य कृति से संकलित है?

उत्तर:- रघुवीर सहाय की 'अभिनायक' कविता 'आत्महत्या के विरुद्ध' काव्य कृति से लेकर पाठ्यपुस्तक दिगंत-भाग-2 में संकलित की गयी है। यह एक व्यंग्य कविता है। आजादी के बाद के सत्ताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण कटाक्ष है। 'राष्ट्रीय गान' में निहित 'अभिनायक' शब्द को लेकर यह व्यंग्यात्मक प्रहार है। आजादी हासिल होने के इतने वर्षों के बाद भी आम आदमी के हालत में कोई बदलाव नहीं आया है। कविता में 'हरचरना' इसी आम आदमी का प्रतिनिधि है।

3. प्रश्न:- 'हरचरना' कौन है? उसकी क्या पहचान है?

उत्तर:- 'हरचरना' 'अभिनायक' शीर्षक कविता में एक आम आदमी का प्रतिनिधि करता है। वह एक स्कूल जाने वाला बदहाल गरीब लड़का है। राष्ट्रीय त्योहार के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में राष्ट्रगान दुहराता है।

हरचरना की पहचान 'फटा सुथन्ना' पहने एक गरीब छात्र के रूप में हुआ है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० कुजरकेला, सीमियाँ

'पथिक' - काव्य - कवि रामनरेश त्रिपाठी 16/05/20

सप्रसंग व्याख्या

शास्त्री द्वितीय खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र

राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न :- रक्तपात करना पशुता है, कायरता है, मन की।
अरि को वश करना चरित्र से शोभा है सज्जन की।

उत्तर :- सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक पथिक खण्ड काव्य के द्वितीय सर्ग से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रकृति प्रेमी कवि रामनरेश त्रिपाठी जी हैं। कवि मुनि द्वारा अहिंसा के महत्व को प्रसारित करवाना चाहता है।

व्याख्या — रक्तपात करना मानव का धर्म नहीं है। जो हिंसा में विश्वास रखते हैं वे पशु के समान होते हैं, कायर होते हैं। यह कायरता उनके मन में व्याप्त रहती है। कवि का कहना है कि अपने दुश्मनों को हिंसा के मार्ग पर चलकर परास्त नहीं कर सकते हैं। अहिंसावादी विचारों के समर्थक अपनी सज्जनता से, मधुर वाणी से उसे समझा कर सही मार्ग पर लाते हैं। इससे सज्जन लोगों की गरिमा बढ़ती है। हिंसा से हिंसा की आग नहीं बुझायी जा सकती है। सम्पूर्ण विश्व को गाँधीवादी विचारों को आत्मसात करना ही होगा। ऐसा करके ही हम संसार में शान्ति स्थापित कर सकते हैं।

प्रेम, क्षमा, करुणा एवं समर्पण से ही देश का कल्याण हो सकता है। घृणा से घृणा का अन्त कभी नहीं होता है।

विशेष - कवि उत्तेजित जनता से कहता है कि आप सभी लोग हिंसा का समर्थन न करें। वह सदैव अहिंसा का अमर सन्देश देता है। कवि का यह भी कहना है कि सम्पूर्ण संसार को अंततः गाँधीवादी विचारों का समर्थन करना ही होगा।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ।